...national Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed–Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 10, No. - 3, April – 2024, Conference Special Issue Hindi

इंदौर शहर के अनुसूचित जाति वर्ग के पुरुषों और महिलाओं के बीच आत्मनिर्भरता के लिए डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के दृष्टिकोण के सामाजिक–राजनीतिक प्रभावों का विश्लेषण

अनुराग रोकडे
शासकीय हमीदिया, कला एवं वाणिज्य, महाविद्यालय, भोपाल, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल, (म.प्र.)
प्रो. डॉ. अनुपमा यादव
बाबुलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल (म.प्र.)
प्रो. डॉ. वर्षा सागोरकर
शासकीय हमीदिया, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

सारांश :– इस शोध पत्र में, हम डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के सामाजिक–राजनीतिक निहितार्थों की जांच करते हैं। आधुनिक भारत के इंदौर शहर में अनुसूचित जाति (एससी) समुदायों के बीच आत्मनिर्भरता के लिए अम्बेडकर की वकालत का विश्लेषण करते हैं। मात्रात्मक सर्वेक्षणों और गुणात्मक साक्षात्कारों के संयोजन के माध्यम से, हम चार प्रमुख पहलुओं का पता लगाते हैं: सामाजिक स्थिति, शैक्षिक प्राप्ति, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के बीच भागीदारी पर डॉ. अंबेडकर की शिक्षाओं का प्रभाव। हमारे निष्कर्षों से अनुसूचित जाति समुदायों पर आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के प्रभाव की सूक्ष्म समझ का पता चलता है। हालाँकि सामाजिक स्थिति और शैक्षिक सशक्तिकरण पर इसके सकारात्मक प्रभावों की व्यापक मान्यता है, लेकिन राजनीतिक सहभागिता को बढ़ावा देने में इसकी प्रभावकारिता के बारे में राय अलग–अलग है। ये अंतर्दृष्टि प्रणालीगत असमानताओं को दूर करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने की जटिलताओं को रेखांकित करती हैं। जैसा कि हम समानता और न्याय द्वारा चिह्नित भविष्य की दिशा में प्रयास कर रहे हैं, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की स्थायी विरासत हमें आगे बढ़ा रही है। डॉ. अंबेडकर एक मार्गदर्शक प्रकाशस्तंभ के रूप में कार्य करते हैं, जो हमें जाति या पंथ की परवाह किए बिना समाज के सभी सदस्यों के लिए सम्मान और सशक्तिकरण की हमारी खोज जारी रखने के लिए प्रेरित करते हैं।

मुख्य शब्द :– डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, आत्मनिर्भरता, अनुसूचित जाति, इंदौर शहर।

प्रस्तावना :– मध्य प्रदेश के पश्चिम में स्थित इंदौर जिला, विशेष रूप से अनुसूचित जाति आबादी के लिए भारत के विविध सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य का सूक्ष्म जगत के रूप में कार्य करता है। 2011 की ... सामना की जाने वाली जनसांख्यिकीय वास्तविकताओं और सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को दर्शाता है। इस आबादी में से, 74.1 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में रहते हैं, जबकि 25.9 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं, जो उनके अनुभवों की बहुमुखी प्रकृति को उजागर करता है। इंदौर जिले की जनसांख्यिकीय संरचना अनुसूचित जाति समुदायों द्वारा शिक्षा और आर्थिक अवसरों तक पहुँचने में आने वाली चुनौतियों को रेखांकित करती है। जबकि औसत साक्षरता दर 80.87 प्रतिशत है, असमानताएँ बनी हुई हैं, शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों में 68.9 प्रतिशत की तुलना में 84.9 प्रतिशत की उच्च साक्षरता दर है। इसके अलावा, साक्षरता दर में लिंग अंतर (पुरुषों के लिए 75.88 प्रतिशत और महिलाओं के लिए 64.65 प्रतिशत जाति और लिंग–आधारित भेदभाव के अंतरविभाजक आयामों को रेखांकित करता है।

2011 की जनगणना से अनुसूचित जाति आबादी के भीतर बाल जनसांख्यिकी में संबंधित रुझान का भी पता चलता है, जिसमें 13 प्रतिशत आबादी में 0–6 वर्ष की आयु के बच्चे शामिल हैं। 901 का बाल लिंग अनुपात लगातार लिंग असंतुलन को दर्शाता है, जो स्थापित सामाजिक – सांस्कृतिक मानदंडों और प्रणालीगत बाधाओं का संकेत है। ये आँकड़े इंदौर जिले में अनुसूचित जाति समुदायों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों के समाधान के लिए लक्षित हस्तक्षेप की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

इस संदर्भ में, आत्मनिर्भरता के माध्यम से अनुसूचित जाति समुदायों का सशक्तिकरण सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरता है। आत्मनिर्भरता पर डॉ.अंबेडकर की शिक्षाएं इस संदर्भ में गहराई से प्रतिबिंबित होती हैं, जो अनुसूचित जाति आबादी के लिए मुक्ति और सामाजिक समानता की दिशा में एक मार्ग प्रदान करती हैं। यह शोध ... शहर में अनुसूचित जाति के पुरुषों और महिलाओं ...